Series-10 **Topic ID:- 6510162**

Important Topic

66th BPSC Preliminary Examination-2020

TOPIC:

BIHAR SPECIAL

- प्राचीन व मध्यकाल में बिहार शिक्षा का एक महान केन्द्र था। यहाँ विहारों (बौद्ध भिक्षुओं के रहने का स्थान)की बहुलता थी। जगह-जगह ऐसे विहार बने थे समयकाल में वष्टद्धि के साथ-साथ विहार भी अपभ्रंशित होकर बिहार हो गया। अर्थात बौद्ध विहारों की अधिकता के कारण इस क्षेत्र का नाम बिहार पड़ा।
- पुरापाषाणकालीन संस्कृति के उद्भव और विकास का आरम्भिक प्रमाण दक्षिणी बिहार के छोटानागपुर पठार (वर्तमान में झारखण्ड का हिस्सा) पर स्थित धनबाद जिला में स्थित कुनकुने गाँव से प्राप्त होता है। सन् 1865 ई. में इस स्थान पर श्री बी. पॉल और हुगल द्वारा खुदाई की गई थी जिसमें पत्थर की कुल्हाड़ी और पत्थर के चाकू प्राप्त हुए थे। इस समय से अब तक छोटानागपुर के पठार के साथ-साथ बिहार के नालंदा, गया, मुंगेर और भागलपुर जिला के अनेक स्थानों पर निम्न मध्य और उच्च पुरा-पाषाणकाल तथा मध्य पुरा-पाषाणकाल के अवशेष मिले है। उत्तर बिहार के वाल्मिकी नगर (पश्चिमी-चम्पारण) में कुछ पुरापाषाणकाल के उपकरण प्राप्त हुए है। इन उपकरणों में आशुलियन प्रकार की हाथ की कुल्हाड़ियाँ, अर्द्ध चान्द्रिक हासिया, छुरी, खुरचनी, फलक झुड़िया तथा स्क्रेपर आदि प्रमुख है।
- ताम्रषाणाणिक संस्कृति के बाद एक ऐसी संस्कृति का विकास हुआ जिसमें मानव द्वारा लोहे से बने औजारों का प्रयोग किया गया। इसे लौह-संस्कृति के नाम से जाना जाता है। बिहार के भौतिक जीवन के विकास में

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

लौह तकनीक के विकास ने एक नये अध्याय की शुरूआत की। लोहे के व्यवहार का पहला साक्ष्य चिरांद और ताराडीह में मिला है।

- शतपथ ब्राह्मण से ज्ञात होता है कि आर्यों के मुखिया विदेह माधव अपने पुरोहित गौतम राहुगण और याज्ञिक अग्नि के साथ सरस्वती नदी से सदानीरा गंडक के तट पर पहुँचे। आर्यों ने गण्डक नदी को पार किया और इसके पूर्वी भाग में स्थित जंगलों को काटकर उत्तर बिहार में स्थित मिथिला क्षेत्र में एक बस्ती की स्थापना की। यह बिहार में आर्यों की पहली बस्ती थी। यहीं से बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में आर्यों का फैलाव हुआ। माधव विदेह ने मिथिला में आर्य केन्द्र स्थापित किया। विदेह के राजवंश की शुरूआत सूर्यवंशी इक्ष्वाकु के पुत्र निमि विदेह से मानी जाती है। विदेह राजवंश के 25वें राजा सिरध्वज जनक थे। सीता उन्हीं की पुत्री थी। राजा जनक के दरबार में वैदेह के विख्यात विद्वान रहते थे। इन्हीं के संरक्षण में विश्व विख्यात विद्वान याज्ञवल्क्य, विधि और नियमों की स्थिति अनुसार व्याख्या करते थे तथा गौतम दर्शन की जटिलताओं को सुलझाने में तल्लीन रहते थे।
- विशाल ने वैशाली नगर की स्थापना की। रामायण और पुराण के अनुसार राजा इक्ष्वाकु की 24वीं पीढ़ी में राजा तृणबिन्दु की रानी अलमबुसा के गर्भ से विशाल नामक बालक ने जन्म लिया। इसी विशाल ने बड़े होकर वैशाली नगर की स्थापना की। वैशाली का नाम प्राचीन भारत में लिच्छवी की राजधानी के रूप में दर्ज है।
- स्कंदगुप्त के भीतरी अभिलेख से ज्ञात होता है कि पराक्रमी गुप्त शासक समुद्रगुप्त ने अश्वमेघ यज्ञ का आयोजन करवाया था। उसकी ख्याति देश के साथ-साथ विदेशों में भी फैल चुकी थी। श्रीलंका के तत्कालीन शासक मेघवर्मा ने समुद्रगुप्त की सेवा में दूतों द्वारा उपहार भेजा तथा श्रीलंका से आनेवाले बौद्ध भिक्षुओं की सुविधा के लिए बोधगया में एक विहार बनवाने की अनुमति मांगी। समुद्रगुप्त ने श्रीलंकाधिपति का अनुरोध सहर्ष स्वीकार कर लिया। तत्पश्चात् मेघवर्मन ने बोधगया में एक विहार और विश्राम गृह का निर्माण करवाया।
- बिहार के शाहाबाद (भोजपुर जिला) और गया जिले से प्राप्त अभिलेखों से परवर्ती गुप्त वंश की जानकारी मिलती है। इस वंश का संस्थापक कृष्ण गुप्त था। वह मौखरि राजा हरिवर्मा का समकालीन था। कृष्ण गुप्त ने अपनी पुत्री हर्षगुप्ता की शादी हरिवर्मा के पुत्र आदित्य वर्मा के साथ की थी।
- पाल शासक धर्मपाल बौद्ध धर्मानुयायी होते हुए भी एक धर्म सहिष्णु व्यक्ति था। उसने बौद्ध धर्म के तंत्रयान शाखा को राजकी प्रश्रय दिया तथा भागलपुर के निकट विक्रमशिला महाविहार की स्थापना की। उसने सोमपुर विहार की भी स्थापना की। उसी के संरक्षण में बोधगया में चतुर्मुख महादेव की प्रतिमा प्रतिष्ठित हुई थी। धर्मपाल के शासनकाल में ही धीमन और विठ्पाल ने 'पाल कला' की नींव डाली थी। धर्मपाल की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र देवपाल 815 ई. में पालवंश का राजा बना। वह एक प्रतापी योद्ध, साम्राज्य निर्माता और कुशल प्रशासक होने के साथ-साथ बौद्ध धर्म एवं भारतीय संस्कृति का संरक्षक भी था। उसने लगभग 35 वर्षों तक शासन किया। अपने पिता धर्मपाल की दिग्विजय नीति का अनुसरण करते हुए उसने नये-नये प्रदेशों को अपने साम्राज्य में सम्मिलित किया। उसने हिमालय और विंध्याचल के बीच के समस्त प्रदेशों पर विजय प्राप्त की थी। उसने उत्कल, हूण, द्रविड़ और गुर्जर राजाओं के गर्व का दमन किया था। मुंगेर अभिलेख (बिहार) से ज्ञात होता है कि उसने दक्षिण में सेतुबंध रामेश्वरम् तक अपने आधिपत्य की स्थापना की थी। कामरुप और उड़ीसा का प्रदेश इसी के शासनकाल में पाल साम्राज्य में सम्मिलित किया गया। एक निर्माता के रुप में उसने मगध में मन्दिर और विहार का निर्माण करवाया और नालन्दा महाविहार के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उसने अफगान विद्वान वीरदेव को जलालाबाद से बुलाकर नालन्दा महाविहार का अध्यक्ष नियुक्त किया। देवपाल ने दर्भपाणि तथा केदार मिश्र जैसे विद्वानों को अपना मंत्री नियुक्त किया था।

From The Book BIHAR SAMANYA VIVARNIKA BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

- 14वीं शताब्दी की शुरूआत में शक्तिसिंह देव का पुत्र हरिसिंह देव मिथिला का शासक बना। वह कर्णाट वंश का अंतिम महान शासक साबित हुआ। उसे 'कर्णाट वंशोदभन शत्रुजेता हरिसिंह देव महाराज' कहा जाता था। राजनीति रत्नाकार के रचयिता चण्डेश्वर ठाकुर, मैथिली की प्रथम पुस्तक वर्ण रत्नाकर के रचनाकार ज्योतिरीश्वर ठाकुर, देवादित्य, वीरेश्वर आदि उसके दरबार की शोभा बढ़ाते थे।
- लोदी वंश के शासक बहलोल लोदी की मृत्यु के बाद उसका पुत्र सिकन्दर लोदी दिल्ली की सत्ता पर आसीन हुआ। उसने जौनपुर के सूबेदार बारबक शाह के विद्रोह का दमन करने के बाद हुसैन शाह शर्की के षडयंत्रों को कुचलने के लिए बिहार की ओर प्रस्थान किया। तिरहुत तथा सारण के विद्रोही जमींदारों ने बिना शर्त सिकन्दर लोदी की अधीनता स्वीकार कर ली
- बिहार राज्य का नामकरण, इसकी भौगोलिक सीमाओं का निर्धारण और एक स्वतंत्र राज्य के रूप में इसका अस्तित्व मध्यकाल में ही दिखाई पड़ता है। बिहार शब्द विहार का अपभ्रंश है। बख्तियार खिलजी द्वारा बिहार में मुस्लिम सत्ता की स्थापना के क्रम में नालन्दा विश्वविद्यालय के समीप स्थित उदन्तपुरी के दुर्ग जिसे मुस्लिम इतिहासकार मिन्हाज-उल-शिराज ने हिसार-ए-बिहार कहा है पर विजय प्राप्त कर इसके समीपवर्ती इलाकों पर अधिकार करने के पश्चात यह पूरा इलाका बिहार के नाम से जाना जाने लगा।
- शेरशाह सूरी प्रथम बिहारी हुआ जिसे 'भारत का बादशाह' बनने का गौरव प्राप्त है। यद्यपि वह अलपकाल तक ही शासन चला सका। किन्तु इसी कालावधि में उसके द्वारा किए गए प्रशासनिक प्रबंधन संबंधी कार्य, प्रांतीय प्रशासन संबंधी कार्य, सैन्य प्रशासन व न्याय व्यवस्था संबंधी कार्य तथा भू-सुधार संबंधी कार्य भारतीय इतिहास में अध्ययन के केन्द्र है। वर्तमान प्रशासनिक व्यवस्था में भी उसके द्वारा किए गए जनकल्याणकारी कार्यों का उदाहरण दिया जाता है। शेरशाह ने एक केन्द्रीकृत शासन प्रणाली को आधार बनाया। वह स्वयं सम्पूर्ण शासन व्यवस्था का प्रधान था। इतने बड़े साम्राज्य का प्रशासन सुचारू रूप से चलाया जा सके इसके लिए उसने एक मंत्रिपरिषद की भी व्यवस्था की। कार्यों के कुशल सम्पादन के लिए उसने केन्द्रीय स्तर पर 5 विभागों की स्थापना की जो इस प्रकार हैं-
  1. दीवान-ए-आरिज- सैन्य विभाग, मुख्य अधिकारी-आरिजे मुमालिक।
  2. दीवान-ए-वजारत- वित्त विभाग, मुख्य अधिकारी-वजीर।
  3. दीवान-ए-इंशा- राजकीय आदेशों एवं घोषणाओं को लिपिबद्ध करना, मुख्य अधिकारी दबीरे मुमालिक
  4. दीवान-ए-रसातल- विदेश मंत्रालय का कार्य करता था।
  5. दीवान-ए-बरीद- गुप्तचर विभाग

  इन प्रमुख विभागों के अतिरिक्त कुछ केन्द्रीय अधिकारियों की भी व्यवस्था की गई थी। मीर-ए-आतिश के नियंत्रण में शेरशाह का तोपखाना था। धार्मिक विषय मुख्य सद्र और न्यायिक विषय मुख्य काजी के अधीन थे। मुहतसिब नामक केन्द्रीय अधिकारी लोगों की नैतिक आचारों पर नजर रखता था।
- 22 अक्टूबर 1764 ई. के बिहार के बक्सर में अवध के नवाब शुराजुदौला, मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय वं बंगाल की नवाबी से बेदखल किए गए असंतुज्ट नवाब मीरकासिम और अंग्रेजों के बीच एक युद्ध हुआ। इसे ही बक्सर युद्ध की संज्ञा दी गई है। मेजर हेक्टर मुनरों के नेतृतव में अंग्रेजी सेना ने बक्सर के युद्ध में इस त्रिगुट को बुरी तरह पराजित किया। इस पराजय के साथ ही बंगाल के साथ-साथ बिहार पर भी अंग्रेजो का नियंत्रण स्थापित हो गया। निर्णायक बक्सर युद्ध से पहले बंगाल के नबाव मीरकासिम तथा अंग्रेजों के बीच कई झड़पे हुई। कटवा, गिरिया तथा सुती नामक स्थान पर अंग्रेजों की सेना ने मीरकासिम की सेना को परास्त किया। इसमें सबसे प्रमुख 2 सितम्बर 1763 ई. को लड़ा गया उदयनाला का युद्ध था जिसमें मीरकासिम बुरी तरह पराजित हुआ। इस पराजय से विक्षुब्ध मीरकासिम ने पटना में गिरफ्तार 148 अंग्रेज सैनिकों की हत्या

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

करवा दी। मीरकासिम के अधिकारियों की गद्दारी के कारण पटना और मुंगेर उसके हाथ से निकल गया तथा उसे अवध में शरण लेनी पड़ी?

- उन्नीसवी शताब्दी में भागलपुर से राजमहल पहाड़ी तक के विस्तृत क्षेत्र को 'दामन-ए-कोह' कहा जाता था। वीरभूम, ढ़ालभूम, सिंहभूम, मानभूम और बांकुड़ा के जमींदारों द्वारा सताए जाने के बाद संथाल जाति समुदाय 1890 ई. में इसी क्षेत्र में आकर बसने लगे थे।
- 1885 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ बिहारियों की राष्ट्रीय चेतना कुछ और प्रबल हुई। कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में तो बिहार के किसी प्रतिनिधि ने भाग नहीं लिया किन्तु 1886 ई. के कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में बिहार के 31 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया था। यह वैचारिक क्रान्ति की ही देन थी कि 1887 ई. के कांग्रेस के मद्रास अधिवेशन में बिहार के दो प्रतिनिधियों शालिग्राम सिंह एवं गुरु प्रसाद सेन ने न सिर्फ बहस में भाग लिया बल्कि अपनी ओजस्वी भाषण से लोगों में राष्ट्रवाद की भावना को जागृत किया। शालिग्राम सिंह ने सैन्य सेवा प्रस्ताव के समर्थन में भाषण दिया और गुरु प्रसाद सेन ने लोक व्यय पर एक प्रस्ताव पेश किया। इसके बाद से ही बिहार के अधिकाधिक प्रतिनिधि कांग्रेस के अधिवेशनों में जाने लगे और धीरे-धीरे बिहार में ब्रिटिश विरोधी आन्दोलनों का माहौल तैयार होने लगा।
- 1914 ई. में ब्रिटिश सरकार के संवैधानिक सुधार की समस्या पर बात करने के लिए इंग्लैंड गये सात सदस्यीय भारतीय प्रतिनिधिमण्डल में दो बिहारी मजहरुल हक और सच्चिदानंद सिन्हा भी शामिल थे।
- बिहार में क्रांतिकारी आतंकवाद का विकास बंगाल के नवयुवाओं की क्रांतिकारी गतिविधियों से प्रेरित है। बंगाल विभाजन के पश्चात् इसमें और अधिक तीव्रता आयी। अपने क्षेत्र में विशेष उपलब्धि प्राप्त किए व्यक्तियों ने अपने-अपने माध्यम से क्रांतिकारी गतिविधियों को बिहार में बढ़ाने का प्रयास किया। इसी क्रम में सीवान के तत्कालीन कवि बिहारी लाल गुप्त ने 4 नवम्बर 1912 ई. को छपरा से प्रकाशित बिहार पत्रिका में 'धर्म पताका' नाम से एक क्रांतिकारी कविता लिखा। इस कविता के माध्यम से बिहारीलाल गुप्त ने धर्म के माध्यम से क्रांति का प्रचार किया था।
- 30 अप्रैल 1908 ई. को प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस नामक दो क्रांतिकारी नवयुवकों ने मुजफ्फरपुर के जिला जज डी.एच. किंग्सफोर्ड पर यूरोपीयन क्लब (मुजफ्फरपुर में इसकी एक शाखा थी) से बाहर आते हुए उसकी हत्या करने के लिए बग्गी पर सवार होते समय उस पर बम फेंका, किन्तु वह बच गया। दुर्भाग्य से बग्गी पर सवार मुजफ्फरपुर के प्रसिद्ध वकील प्रिंगले कनेडी की बेटी और उसकी पत्नी की मृत्यु हो गयी। खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी वहाँ से भाग निकले किंतु 1 मई 1908 ई. को खुदीराम बोस को पूसा रोड के पास (समस्तीपुर) से गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर मुजफ्फरपुर में मुकदमा चला और 11 अगस्त 1908 ई. को उनको फाँसी दे दी गयी (जिनकी आयु केवल 19 वर्ष थी)।
- 16 दिसम्बर 1916 ई. को बिहार में होमरूल लीग की शाखा स्थापित करने की आवश्यकता पर विचार-विमर्श करने के लिए मजहरूल हक की अध्यक्षता में पटना में एक सभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता करते हुए मजहरूल हक ने कहा कि अन्य प्रान्तों की तरह बिहार में भी होमरूल लीग की स्थापना करना अति आवश्यक हैं क्योंकि इसके बिना स्वराज्य का लक्ष्य प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है। होमरूल की महत्ता पर विशेष प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि इसका उद्देश्य जनता को स्वशासन के मामले में प्रशिक्षित कर कोने-कोने में स्वराज्य के महत्व का प्रचार करना है। लोगों की सहमति के बाद इसी सभा में होमरूल लीग की स्थापना की गई जिसके अध्यक्ष मजहरूल हक बने। उपाध्यक्ष के पद पर राय

From The Book BIHAR SAMANYA VIVARNIKA BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

बहादुर पूर्णेन्दु नारायण सिन्हा एवं खाँ बहादुर सरफराज हुसैन खाँ बैठे तथा चन्द्रवंशी सहाय एवं वैद्यनाथ नारायण सिंह ने सचिव का पद संभाला। बिहार होमरूल लीग के अध्यक्ष मजहरूल हक ने कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन (अध्यक्षता-ए.सी. मजूमदार, विशेष कांग्रेस और मुस्लिम लीग एक हो गये) में 29 दिसम्बर 1916 ई. को स्वशासन संबंधित प्रस्ताव पर बोलते हुए कहा कि अब भाषण देने तथा वाद-विवाद का समय नहीं है बल्कि काम करने का समय है।

बिहार का चम्पारण जिला इस समय नीली आग की चपेट में मुक्ति पाने के लिए संघर्ष कर रहा था। अत: यहाँ होमरूल आन्दोलन का प्रभाव न के बराबर देखा गया किन्तु चम्पारण को छोड़कर समूचे बिहार में होमरूल का प्रचार-प्रसार जोर-शोर से हो रहा था।

- असहयोग आंदोलन के क्रम में मजहरूलहक, राजेन्द्र प्रसाद, ब्रजकिशोर प्रसाद, मोहम्मद शफी और अन्य नेताओं ने विधायिका के चुनाव से अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली। अनेकों अधिकारियों ने त्याग-पत्र दे दिया और वकीलों ने अदालतों का बहिष्कार किया। इसमें महेन्द्र प्रसाद, खुरशैद हसनैन, श्री कृष्ण सिंह, गौरव प्रसाद, दीपनारायण सिंह, जकारिया हुसैन हासमी, मथुरा प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिंह और ब्रजकिशोर प्रसाद प्रमुख थे। राजेन्द्र प्रसाद के भाई राय साहब महेंद्र प्रसाद ने आंदोलन के दौरान राय साहब की उपाधि लौटा दी तथा अवैतनिक मजिस्ट्रेट के पद से इस्तीफा दे दिया। असहयोग प्रस्ताव ने बिहार में भी अपनी उपस्थिति दर्ज की। अगस्त 1920 में भागलपुर में राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में 'बिहार प्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलन' की बैठक बुलाई गई जिसमें गाँधी जी के असहयोग प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया। बिहार में भी असहयोग आंदोलन प्रारंभ हो गया। ब्रजकिशोर प्रसाद के सुझाव पर स्वराज के मुद्दे को भी असहयोग आंदोलन में सम्मिलित कर लिया गया, जो राष्ट्रीय आंदोलन का हिस्सा नहीं था, जबकि सच्चिदानंद सिंह और हसन इमाम ने गाँधी जी के इस प्रस्ताव का विरोध किया। असहयोग आंदोलन के समय बिहार के छात्रों ने स्कूल व कॉलेजों का बहिष्कार किया। इन छात्रों को शिक्षा का विकल्प उपलब्ध कराने के लिए पटना-गया रोड़ पर मोहम्मद फजलुल रहमान एवं राजेन्द्र प्रसाद ने मिलकर 5 जनवरी 1921 ई० को 'बिहार राष्ट्रीय महाविद्यालय' की स्थापना की। राजेन्द्र प्रसाद इसके प्राचार्च बनाए गए। इसी बीच बिहार कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के पन्द्रह छात्र कॉलेज त्याग कर मजहरूल हक के पास मार्गदर्शन के लिए आए। अपने मित्र खैरुमियाँ से जमीन दान लेकर मजहरूल हक ने दीघा के पास 'सदाकत आश्रम' का निर्माण किया। यहाँ छात्रों द्वारा चरखा बनाने का काम आरंभ किया गया। धीरे-धीरे यह स्थान बिहार में राष्ट्रीय आंदोलन का मुख्यालय बन गया। कालान्तर में यह बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटि का कार्यालय बना। 30 सितम्बर 1921 ई० को मजहरूल हक ने सदाकत आश्रम से 'दि मदरलैंड' नामक एक अखबार निकालना शुरू किया जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय भावना का प्रसार, असहयोग कार्यक्रम का प्रचार और हिन्दु-मुस्लिम एकता का उपदेश देना था। असहयोग आंदोलन को छपरा में स्थानीय नेतृत्व देने वाले स्थानीय नेता राहुल सांकृत्यायन एवं नागनारायण ने छठ के समय सायँ एवं भोर काल में नदी, तालाबों, पोखरों आदि के पास जाकर 'असहयोग आंदोलन' के संदेश को फैलाया।

BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
(Approved By: Govt. Of India)
Mob:- 8368040065
What's app- 9355167891
Email- biharnaman@gmail.com
Facebook-
BIHAR NAMAN
Telegram-
http://t.me/biharnaman
(pdf is available here)
Bihar Naman Publishing House, New Delhi
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE